नवभारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

अब एसआईआर का विवाद समाप्त होना चाहिए

बिहार विधानसभा चुनाव से पहले मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) को लेकर जिस तरह का राजनीतिक और कानूनी विवाद खड़ा किया गया था, उस पर अब सुप्रीम कोर्ट की स्पष्ट मुहर लग चुकी है. शीर्ष अदालत ने न केवल एसआईआर प्रक्रिया को संवैधानिक और वैध ठहराया है, बल्कि यह भी स्पष्ट कर दिया है कि चुनाव आयोग को मतदाता सूची की जांच, संशोधन और सत्यापन के लिए विशेष प्रक्रिया अपनाने का अधिकार है. ऐसे में अब इस मुद्दे पर अनावश्यक राजनीतिक भ्रम और अविश्वास फैलाने की कोशिशों पर विराम लगना चाहिए.

मुख्य न्यायाधीश जस्टिस सूर्यकांत और जस्टिस जॉयमाल्या बागची की पीठ ने अपने फैसले में संविधान के अनुच्छेद 324 तथा जनप्रतिनिधित्व अधिनियम 1950 का उल्लेख करते हुए कहा कि चुनाव आयोग को मतदाता सूची को पारदर्शी, शुद्ध और अद्यतन बनाए रखने का पूरा अधिकार प्राप्त है. लोकतंत्र की विश्वसनीयता केवल मतदान कराने से नहीं, बल्कि यह सुनिश्चित करने से भी तय होती है कि मतदाता सूची में केवल पात्र नागरिकों के नाम ही शामिल हों. यदि मतदाता सूची में फर्जी, मृत या अयोग्य व्यक्तियों के नाम बने रहते हैं, तो इससे चुनाव प्रक्रिया की निष्पक्षता प्रभावित होती है.

इस पूरे विवाद में सबसे महत्वपूर्ण बात यह रही कि सुप्रीम कोर्ट ने नागरिकता और मतदाता सूची को अलग-अलग विषय माना. अदालत ने साफ कहा कि यदि किसी व्यक्ति का नाम मतदाता सूची में नहीं है, तो इसका अर्थ यह नहीं कि उसने अपनी नागरिकता खो दी. यह केवल इतना दर्शाता है कि चुनाव आयोग संबंधित व्यक्ति की पात्रता या नागरिकता का सत्यापन नहीं कर पाया. यह टिप्पणी अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि विपक्षी दलों और कुछ संगठनों द्वारा यह आशंका पैदा की जा रही थी कि एसआईआर प्रक्रिया नागरिकों को 'गैर-नागरिक' घोषित करने का माध्यम बन सकती है. दरअसल, मतदाता सूची का शुद्धिकरण किसी भी लोकतंत्र की नियमित और आवश्यक प्रक्रिया है. भारत जैसे विशाल और गतिशील देश में जनसंख्या, पलायन, मृत्यु और निवास परिवर्तन लगातार होते रहते हैं. ऐसे में समय-समय पर विशेष पुनरीक्षण आवश्यक हो जाता है. सुप्रीम कोर्ट ने यह भी स्वीकार किया कि विशेष परिस्थितियों में चुनाव आयोग विशेष प्रक्रिया अपना सकता है और यह संविधान का उल्लंघन नहीं माना जा सकता.

इस फैसले का एक और महत्वपूर्ण पहलू यह है कि अदालत ने चुनाव आयोग की निष्पक्षता और अधिकार क्षेत्र पर लगाए गए आरोपों को खारिज कर दिया. जाहिर है कि कोर्ट ने चुनाव आयोग द्वारा अपनाई गई प्रक्रिया को स्वतंत्र, निष्पक्ष और कानूनसम्मत माना है. अदालत ने 11 मान्य दस्तावेजों की सूची को भी उचित ठहराया और आधार को लेकर कोई नकारात्मक टिप्पणी नहीं की.

लोकतंत्र केवल अधिकारों से नहीं, बल्कि प्रक्रियाओं की विश्वसनीयता से भी मजबूत होता है. यदि चुनाव आयोग मतदाता सूची को साफ और पारदर्शी बनाने का प्रयास कर रहा है, तो इसे राजनीतिक संदेह के बजाय संस्थागत सुधार के रूप में देखा जाना चाहिए. चुनाव सुधारों की दिशा में यह फैसला एक महत्वपूर्ण कदम है. दरअसल, अब आवश्यकता इस बात की है कि राजनीतिक दल और नागरिक समाज इस मुद्दे को अनावश्यक विवाद का विषय बनाने के बजाय लोकतांत्रिक व्यवस्था की मजबूती के रूप में देखें. बहरहाल, सुप्रीम कोर्ट का यह निर्णय स्पष्ट कर देता है कि स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनावों के लिए शुद्ध मतदाता सूची अनिवार्य है. ऐसे में अब एसआईआर पर विवाद समाप्त होना ही लोकतंत्र के हित में होगा.

ग्वालियर चंबल डायरी

फेरबदल की सरगर्मी ने मंत्रियों को किया बेचैन, विधायकों की बढ़ाई आस

हरीश दुबे

ढाई बरस का वक्त पूरा करने जा रही मोहन सरकार के मंत्रिमंडल के पहले फेरबदल की सुगबुगाहट ने ग्वालियर चंबल की सियासत में हलचल मचा दी है. मौजूदा मंत्री अपनी कुर्सी बचाने की कवायद के साथ ही विभागों में कटौती के खतरे को टालने की जद्दोजहद में हैं तो कतार में लगे वेटिंग इन मिनिस्टर्स ने अपने सपने पूरे करने के लिए दिल्ली और भोपाल के लिए दौड़ तेज कर दी है.

ग्वालियर से दो, भिंड और मुरैना से एक एक विधायक इस वक्त मंत्री सुख भोग रहे है. अंदरखाने अभी तलक तो खबर यही है कि इनके मंत्री पद पर आंच नहीं है लेकिन ऐन वक्त क्या नए समीकरण बन जाएं, कहना मुश्किल है. मंत्रिमंडल में जिला वार नुमाइंदगी के पैमाने पर दतिया और शिवपुरी जिला अभी सिफर ही हैं. भिंड के नरेन्द्र सिंह कुशवाहा और सेबढ़ा के प्रदीप अग्रवाल कई बार चुने जा चुके पुराने विधायक हैं, लिहाजा खुलकर दौड़ में हैं. ग्वालियर अंचल के मिनिस्टर्स का रिपोर्ट कार्ड ठीक ही रहा है, लिहाजा उम्मीद यही की जा रही है कि इस अंचल पर कैंची नहीं चलेगी, नाम बढ़ेंगे ही.

समर नाइट मेला कागजों में निबटा, अब सावन मेले का सब्जबाग

ग्वालियर मेला अथॉरिटी के नए ओहदेदार स्वागत जुलूसों, तकरीरों और छत्रपों की वंदना में ही व्यस्त रहे और इधर समर नाइट मेला का पहले से तय वक्त ही निकल गया. नौतपा अपने उरूज़ पर पहुंचने के बाद मानसून करीब आ गया और गर्मियों के मेले की तैयारी किए बैठे कारोबारियों की उम्मीदों पर पानी फिर गया है. अब मेला अथॉरिटी नया सब्जबाग दिखाकर अपनी गलती ढांपने में लगी है कि समर नाइट मेला की जगह श्रावणी मेला लगेगा और इसके लिए तैयारी शुरू हो चुकी है. श्रावणी मेला का अर्थ है अगस्त तक इंतजार और बरसात का खतरा. दुकानदार मेला की कच्ची पक्की दुकानों में भरी बरसात के मौसम में अपना कारोबार सजाने के लिए कतई राजी नहीं हैं. सच्चाई यह है मेला के अधिकारियों ने समर नाइट मेला के लिए महीनों पहले से जो तैयारियां की थीं, वे अथॉरिटी में हुई राजनीतिक नियुक्तियों के शोर शराबे में दबकर रह गईं.

उपचुनाव की रणभेरी कभी भी...

अब यह लगभग तय हो गया है कि दतिया विधानसभा सीट पर उपचुनाव होकर ही रहेंगे. दिल्ली हाईकोर्ट में चल रहे राजेंद्र भारती के मामले में अगली तारीख 14 जुलाई लगने के बाद राजनीतिक हलकों में आसार लगाए जा रहे हैं कि इस सीट पर चुनाव आयोग अब कभी भी उपचुनाव की तारीख का ऐलान कर सकता है. यहां से कई मर्तबा विधायक रहे और पिछला चुनाव हारे डॉ. नरोत्तम मिश्रा की भोपाल में अपनी पार्टी के प्रदेश प्रभारी महेंद्र सिंह से लंबी एकांत मंत्रणा के बाद उपचुनाव की संभावनाओं को और ज्यादा बल मिला है. तारीख अभी घोषित नहीं हुई है लेकिन चुनावी वैतरणी को पार करने के लिए दोनों दल कमर कसकर तैयार बैठे हैं. कांग्रेस के समक्ष सीट बचाने और भाजपा के सामने इस परंपरागत सीट पर 23 में खोई हुई प्रतिष्ठा को फिर से हासिल करने की चुनौती है.

सांसद के कार्यक्रमों से सिंधिया समर्थकों ने बना ली दूरी

ग्वालियर भाजपा में मची गुटीय खींचतान कम होने का नाम नहीं ले रही. सूबा सदर ने अपने हालिया दौरे में पार्टी के स्थानीय अलंबरदारों को जो एकजुटता का पाठ पढ़ाया था, वह भी बेअसर लग रहा है. इसकी ताजा नजीर गंगा दशहरा पर प्रशासन द्वारा मेहराब साहब की तलैया पर रखे गए श्रमदान कार्यक्रम में दिखी. चूंकि इस श्रमदान महोत्सव के खास मेहमान नरेन्द्र सिंह तोमर के नजदीकी सांसद भारत सिंह कुशवाहा थे, नतीजन सिंधिया समर्थक इस जलसे से नदारत रहे. प्रोग्राम पूरी तरह गैर सियासी और जल संरक्षण का पैगाम देने तक सीमित था लेकिन गुटबाजी में गले तक फंसे कार्यकर्ताओं ने गुटबंदी की जो लक्ष्मण रेखाएं पहले से खींच रखी हैं, उन्हें किसी भी सूरत में लांघने के लिए वे तैयार नहीं हुए. इस श्रमदान में एक-दो सिंधिया समर्थक तसला उठाते और फावड़ा चलाते दिखाई भी दिए लेकिन उनकी मौजूदगी निकायों में मिले सरकारी पद की औपचारिकता पूरी करने तक सीमित रही. बेमन से आए ऐसे चेहरे सांसद के करीब आने या उनके साथ श्रमदान करते फोटो खिन्चाने से बचते रहे. इसी कार्यक्रम में सवाल उठने लगे कि आलम यही बरकरार रहा तो अंजाम-ए-सत्ताईस क्या होगा. गौरतलब है कि सत्ताईस में निकाय चुनाव की चुनौती है.

अगला लक्ष्य !

भाजपा का अश्वमेध यज्ञ दक्षिण

राजीव खंडेलवाल

> स्पष्ट है कि भारत में एक फूल से माला नहीं बनती. राष्ट्रीय और क्षेत्रीय- दोनों प्रकार की राजनीतिक शक्तियों के लिए पर्याप्त स्थान है. दक्षिण की ओर बढ़ता अश्वमेध अंग-बंग-कलिंग (बीच में झारखंड को छोड़कर) पर विजय के बाद 30 के 72त्न विभाग और उत्तर प्रदेश जनसंख्या का झंडा गाड़ने के बाद भाजपा के अश्वमेध यज्ञ का अब अगला निशाना उत्तर प्रदेश में पुनरावृत्ति करते हुए दक्षिण के शेष बचे राज्यों आंध्र प्रदेश और तेलंगाना पर भगवा झंडा फहराना है.

भारतीय राजनीति के वर्तमान परिदृश्य में यदि किसी एक दल की रणनीतिक निरंतरता, संगठनात्मक अनुशासन और विस्तारवादी राजनीतिक भूख सबसे स्पष्ट दिखाई देती है, तो वह भारतीय जनता पार्टी है. भारतीय जनसंघ के संस्थापक श्यामा प्रसाद मुखर्जी की जन्मभूमि पश्चिम बंगाल में भाजपा की उल्लेखनीय सफलता को एक प्रकार की वैचारिक घर-वापसी भी कहा जा रहा है. हालांकि यह प्रश्न अभी भी राजनीतिक गलियारों में चाय की प्याली में तूफान बना हुआ है कि बंगाल में आया परिवर्तन वास्तव में बदला नहीं बदलाव था, या बदले की भावना से उपजा बदलाव?

राजनीति में अक्सर दूध का जला छाछ भी फूँक-फूँक कर पीता है, इसलिए विपक्ष इस परिणाम को सहजता से स्वीकार करने की स्थिति में नहीं दिखता. प्रधानमंत्री मोदी का बढ़ता आत्मविश्वास.- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का चुनावी आत्मविश्वास बैरकपुर की अंतिम चुनावी सभा में स्पष्ट रूप से व्यक्ति उनके इस कथन के साथ हुआ— 4 मई के बाद बंगाल में भाजपा के शपथ ग्रहण समारोह में आना ही है.

यद्यपि कांग्रेस-विहीन भारत का लक्ष्य अभी पूर्णतः साकार नहीं हुआ, किंतु भाजपा का वन नेशन, वन पार्टी की दिशा में बढ़ना अब केवल विपक्ष का आरोप नहीं, बल्कि राष्ट्रीय राजनीतिक विमर्श का विषय बन चुका है. ऐसा प्रतीत होता है कि भाजपा ने लोहे को गर्म देखकर चोट करना सीख लिया है. लोकसभा चुनाव परिणाम से मिला सबक.

2024 के लोकसभा चुनाव में एनडीए के सत्ता में आने के बावजूद भाजपा को अपेक्षित बहुमत न मिलना पार्टी के लिए आसमान से गिरकर खजूर में अटकने जैसा क्षण अवश्य था, किंतु यही झटका भाजपा और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के लिए आत्ममंथन का अवसर बन गया. गृह मंत्री अमित शाह की माइक्रो मैनेजमेंट शैली, बूथ स्तर तक की रणनीति और संघ परिवार के जमीनी नेटवर्क ने भाजपा को पुनः राजनीतिक पटरी पर लौटा दिया. भाजपा ने सिद्ध किया कि वह हार को ठोकर नहीं, बल्कि सीढ़ी बनाना जानती है. विधानसभा चुनावों में अप्रत्याशित सफलता. लोकसभा चुनाव के बाद हुए विधानसभा चुनावों में भाजपा ने जिस प्रकार बाउंस बैक किया, उसने राजनीतिक विश्लेषकों को भी चौंका दिया.

चार राज्यों के आसीन मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल नवीन पटनायक एमके स्टालिन और ममता बनर्जी को अपने ही गढ़ में हार का सामना करना पड़ा. राजनीति में कहा जाता है— जो सोता है, वही खोता है. यह सिर्फ संयोग नहीं बल्कि इस बात का संकेत है कि भाजपा चुनाव को इवेंट नहीं निरंतर प्रक्रिया मानकर चलती है. भाजपा चुनाव को पाँच साल का उत्सव नहीं, बल्कि 24 घंटे चलने वाली राजनीतिक साधना मानती है. यही कारण है कि शपथ ग्रहण के अगले दिन से ही अगले चुनाव की तैयारी प्रारंभ हो जाती है. विपक्ष बनाम संगठनात्मक अनुशासन. पश्चिम बंगाल में ममता बनर्जी ने संघर्षशील नेता की छवि बनाए रखी, किंतु भाजपा का संगठनात्मक ढाँचा और विस्तार अधिक प्रभावी सिद्ध हुआ.

दूसरी ओर राहुल गांधी की सीमित चुनावी सक्रियता ने विपक्ष की रणनीतिक कमजोरी को उजागर कर दिया. राजनीति में एक पुरानी कहावत है— जितना पसीना अभ्यास में बहाओगे, उतना खून मैदान में नहीं बहेगा. भाजपा ने इस सिद्धांत को व्यवहार में उतारा है, जबकि विपक्ष कई बार नौ दिन चले अढ़ाई कोस की स्थिति में दिखाई दिया. एंटी-इनकंबेंसी को अवसर में बदलना. सामान्यतः लंबे समय तक सत्ता में रहने वाली सरकारों के विरुद्ध एंटी-इनकंबेंसी पैदा होती है, किंतु भाजपा ने गुजरात और मध्यप्रदेश जैसे राज्यों में इस धारणा को सफलता पूर्वक चुनौती दी. यह केवल चुनावी प्रबंधन नहीं, बल्कि नैरेटिव कंट्रोल और जमीनी संपर्क का परिणाम है.

भाजपा ने यह समझ लिया है कि राजनीति में जो दिखता है, वही बिकता है. राष्ट्रवाद बनाम क्षेत्रीय दल. यह चुनाव एक बड़े प्रश्न को जन्म देता है— क्या क्षेत्रीय दल राष्ट्रवाद के मार्ग में अवरोध हैं? भाजपा के बढ़ते प्रभाव ने तथा तत्कालीन राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा के क्षेत्रीय दलों के संबंध में दिए गए अभियान में बयान ने गंभीर चिंतन अवश्य इस बहस को और तेज कर दिया है. हालांकि यह भी उतना ही सत्य है कि तमिलनाडु और केरल जैसे राज्यों में क्षेत्रीय या गैर-भाजपा दलों की मजबूती भारतीय लोकतंत्र की विविधता को दर्शाती है.

(लेखक, कर सलाहकार एवं पूर्व अध्यक्ष, बैतूल सुधार न्यास हैं.)

भारत से संबंध सुधारने में लगा अमेरिका

ट्रंप के ध्यान में आया कि भारत जैसे देश को अपने से दूर नहीं जाने देना चाहिए. इसलिए उन्होंने अपने विदेशमंत्री मार्को रुबियो को भारत दौरे पर भेजा और मीठी-मीठी बात कर प्रधानमंत्री मोदी के प्रति अपनापन जताने लगे.

राजनय या कूटनीति में न कोई स्थायी मित्र होता है, न स्थायी शत्रु! जरूरत और परिस्थितियों के आधार पर संबंध तय किए जाते हैं. अमेरिका के राष्ट्रपति ट्रंप को चीन दौरे से कोई खास लाभ नहीं हुआ बल्कि शी जिनपिंग ने अपनी अकड़ कायम रखी. तब ट्रंप के ध्यान में आया कि भारत जैसे देश को अपने से दूर नहीं जाने देना चाहिए. इसलिए उन्होंने अपने विदेशमंत्री मार्को रुबियो को भारत दौरे पर भेजा और मीठी-मीठी बात कर प्रधानमंत्री मोदी के प्रति अपनापन जताने लगे. यह भी कहा कि किसी भी जरूरत पर आप मुझ पर भरोसा कर सकते हैं. हकीकत इसके विपरीत है. अपने माता-पिता के साथ जो बच्चे अमेरिका आए थे और डिपेंडेंट (आश्रित) के रूप में थे, उन्हें युवा होने पर कहा जा रहा है कि भारत वापस जाओ और वहां से वीजा लेने और ग्रीनकार्ड हासिल करने की प्रक्रिया पूरी करो. इस तरह उनका भविष्य अधर में लटकाया जा रहा है. रूस से ईंधन लेने पर ट्रंप ने टैरिफ में 50 प्रतिशत की वृद्धि की थी. उन्होंने बार-बार दावा किया था कि भारत पाक संघर्ष उन्होंने रुकवाया. ईरान से समझौता वार्ता के लिए पाकिस्तान को मध्यस्थ बनाया. पिछले एक वर्ष से भी ज्यादा समय से अमेरिका भारत व्यापार समझौता लटका हुआ है. 4 देशों के संगठन क्वाड की भारत में बैठक को भी रोका गया था. इन नकारात्मक स्थितियों के बीच मार्को रुबियो ने भारत की नाराजगी दूर करने की कोशिश की. उन्होंने विदेशमंत्री एस. जयशंकर से चर्चा के दौरान दोनों देशों के बीच ऊर्जा, रक्षा क्षेत्र तथा दुर्लभ खनिज को लेकर आपसी सहयोग बढ़ाने पर सहमति दर्शाई. यह भी कहा कि व्यापार में भारत अमेरिका का सबसे बड़ा भागीदार है. प्रधानमंत्री मोदी को भी अमेरिका यात्रा का निमंत्रण दिया गया. इन बातों से स्पष्ट है अमेरिका अब भारत के सहयोग की आवश्यकता महसूस कर रहा है लेकिन इसके पीछे उसका भी स्वार्थ कम नहीं है.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

नहीं रह गया आपसी विश्वास तुलसी ने छोड़ा ट्रंप का साथ

पड़ोसी ने हमसे कहा, निशानेबाज, तुलसी गबार्ड ने अमेरिका के नेशनल इंटेलिजेंस डायरेक्टर पद से इस्तीफा दे दिया. वह खुफिया विभाग की प्रमुख थीं जैसे हमारे यहां राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल हैं.'

हमने कहा, 'तुलसी ने ठीक ही किया. वह प्रेसिडेंट ट्रंप की नीतियों का लगातार विरोध कर रही थीं. ट्रंप ने वेनेजुएला में सत्ता पलटी और वहां के राष्ट्रपति मादुरो को न्यूयार्क की जेल में कैद किया. ईरान में भी सत्ता पलट के इरादे से हमला किया. तुलसी को ट्रंप का यह रवैया नापसंद था. इसलिए कहा गया है- दुखी मन मेरे सुन मेरा कहना, जहां नहीं चैना वहां नहीं रहना! घुट-घुट कर जीने की बजाय इस्तीफा देना सबसे अच्छा! तुलसी गबार्ड ईसाई धर्म नहीं मानतीं. वह स्वघोषित हिंदू हैं और भारत व भारतीयता से प्रेम रखती हैं.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, अमेरिका की आबोहवा में तुलसी का पौधा टिक नहीं पाता. वहां सितंबर से फरवरी तक कड़ाके की ठंड पड़ती है और बर्फ गिरता है. उस देश का मौसम तुलसी के लिए बिल्कुल अनुकूल नहीं है. भारत में हर हिंदू के घर में तुलसी का पौधा पाया जाता है. उसकी पूजा की जाती है और कार्तिक माह की एकादशी को तुलसी विवाह मनाया जाता है. तुलसी-अदरक की चाय पीने से सर्दी-जुकाम ठीक हो जाता है. तुलसी की पत्ती डाले बिना भगवान को नैवेद्य अर्पण नहीं किया जाता. पुराने घरों के आंगन में तुलसी वृंदावन बनाया जाता था, जिससे घर में सुख-सौभाग्य बना रहता था. अब फ्लैट व अपार्टमेंट में यह संभव नहीं है. तुलसी की महत्ता की वजह से अपने देश में तुलसीदास व तुलसीराम नाम पड़े. किसी महिला का नाम तुलसाबाई भी हो सकता है. पुराण कथा है कि एक बार भगवान कृष्ण को तुला में बिठाकर उन्हें भरपूर सोने-चांदी से तौला गया लेकिन भगवान का पल्ला जरा भी ऊपर नहीं उठा. जब सोने-चांदी वाले पल्ले में तुलसी पत्र रखा गया तो पल्ला तुरंत उठ गया. भगवान को तुलसी अत्यंत प्रिय हैं. शालिग्राम की पूजा में तुलसी अनिवार्य है.'

हमने कहा, 'फिलहाल ट्रंप से तुलसी गबार्ड दूर जा चुकी हैं. अब वह कभी नहीं कहेंगी- मैं तुलसी तेरे आंगन की!'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12271 - डॉ. सागर खादीवाला

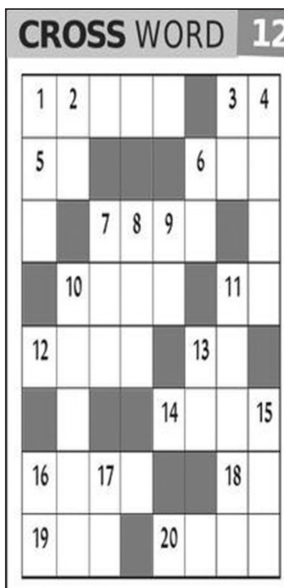

ऊपर से नीचे

1. राजस्थान का एक प्रसिद्ध राजवंश 2. किसी काटने वाले हथियार का तेज सिरा 3. बड़ी नदी 4. अयोध्या के एक सूर्यवंशी राजा जो गंगा को तपस्या करके पृथ्वी पर लाए थे 6. पत्नी की बहन 7. सौ अरब की संख्या 8. वृक्ष का कटा हुआ कोई भाग, ईंधन, काठ 9. बात 10. बक-बक करना, धीरे-धीरे अस्पष्ट शब्दों में कुछ कहना 11. नाक से बोलने वाला, जिसके उच्चारण में नाक का योग हो ऐसा अक्षर 13. महा, अति, बहुत, में 15. पाजेब, नुपुर 16. अंधकार, अंधेरा 17. वृक्ष का नीचे वाला भाग जिसमें डालियां नहीं होती

बाएं से दाएं

1. भारत के एक राष्ट्रपति 3. आकाश 5. जगह, उपयुक्त स्थान, मौका 6. सादापन, सरलता, सीधापन 7. हलचल, घबराहट 10. लाभ, वृद्ध, बढ़ती 11. संग, संगति 12. जल्दी होने के कारण होने वाली घबराहट, उतावली 13. ब्रम्हा के चौदह पुत्र जो मनुष्यों के मूल पुरुष माने जाते हैं 14. बहन का माना हुआ संबंध 16. तड़-तड़ शब्द सहित 18. जानकी, सीता 19. रूठे हुए को प्रसन्न करना 20. इन दिनों

Solution 12270

न	म	क	सा	र	■	ग	धा
र	■	व	न	वा	सी	■	र
क	त	र	ना	■	धा	व	क
गा	र	■	■	आ	प	सी	■
मी	न	मे	ख	■	न	य	न
■	ता	रा	प	थ	■	त	र
दा	र	■	रे	न	■	ना	प
दा	न	शी	ल	■	दा	मा	द

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में बैचारिक अशांति रहेगी, सत्संग से मन आध्यात्मिक शांति का अनुभव होगा, संतोष बना रहेगा, व्यवसायिक तनाव रहेगा, वर्ष के मध्य में पारिवारिक चिन्ता का कारण रहेगा, वर्ष के अन्त में राजनैतिक मित्रों का सहयोग और मार्गदर्शन प्राप्त होगा, प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, नवीन योजनाओं का क्रियान्वयन होगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों की नई योजनाओं का क्रियान्वयन होगा, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों का दाम्पत्य जीवन सुखमय शांतिपूर्ण रहेगा, मिथुनऔर कन्या राशि के व्यक्तियों को सामाजिक मित्रों के कार्यो में व्यस्तता रहेगी, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को राजनैतिक मित्र के सहयोग से पद परिवर्तन होगा, कर्क राशि के व्यक्तियोंको उत्तम सफलता मिलेगी, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों के लिये योजना साकार होगी, सिंह राशि के व्यक्तियों को निजी पुरूषार्थ का लाभ मिलेगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक सुन्दर, सुशील, व्यक्तित्ववान, मिलनसार, आकर्षक एवं तीव्र बुद्धि का होगा, स्वास्थ्य कुछ समय तक नरम गरम रहेगा. बुद्धिमत्ता अच्छी रहेगी, अनेक विद्याओं का ज्ञाता होगा, प्रवास का शौकीन रहेगा.

मेष- साझेदारी की योजना में पूँजी लगाने से लाभ होगा, किसी कार्य में परिश्रम अधिक करना होगा, खर्च की अधिकता रहेगी, शत्रु नुकसान पहुंचाने का प्रयास करेंगे.

वृषभ- पुराने कर्ज से छुटकारा मिल सकता है, उत्तराधिकार में संपतित मिल सकती है, परिवार में मतभेद रहेगा, दूसरों के कारण परेशानी होगी.

मिथुन- आकस्मिक लाभ की उम्मीद है, दोहरे लाभ का अवसर मिल सकता है, वाहन सावधानी से चलायें, अनावश्यक विवाद को टालें, अतिथि आगमन होगा.

कर्क- व्यापारिक अनुबंध लाभदायी रहेगा, मित्रों का सहयोग रहेगा, साहस पराक्रम बढ़ेगा, यश की वृद्धि होगी, नई योजनाओं में लाभ होगा.

सिंह- कार्यक्षेत्र में लंबित मामले निपटाना पड़ेंगे, गुमी वस्तु मिल सकती है, कौटुम्बिक सुख सुविधाओं में वृद्धि होगी, आपसी लोगों को अधिक भरोसा न दें.

कन्या- जमीन जायजाद प्रापर्टी का लाभ होगा, मन में शांति और संतोष रहेगा, आमोद प्रमोद, के कार्य में व्यय होगा, भरपूर सहयोग प्राप्त होगा.

तुला- कार्यस्थल पर सहकर्मियों से परेशानी होगी, कार्यो में सावधानी रखें, रूकावट एवं असफलता मिल सकती है, परिश्रम अधिक करना पड़ेगा.

वृश्चिक- आपसी विवादों को टालने में ही लाभ है, घरेलू बातों पर अधिक ध्यान न दें, अतिथि आगमन का योग है, किसी अनसोचे कार्य में व्यस्तता रहेगी.

धनु- आकस्मिक लाभ की संभावना है, व्यापारिक समझौते अच्छा लाभ दिला सकते हैं, नौकरी एवं राजकीय कार्यो में सफलता मिलेगी, मन में संतोष बना रहेगा.

मकर- कार्यक्षेत्र में कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पडेगा, धार्मिक कार्यो में खर्च होगा, आर्थिक समस्या हल होगी, यात्रा लाभदायक रहेगी.

कुम्भ- चल रहे कार्य में लाभ की संभावना से नई योजना हाथ में ले सकते हैं, शत्रु वर्ग परास्त होगा, धार्मिक कामकाज बनने का योग है.

मीन- भाग्यवर्धक काम बनने का योग है, नए संपर्क आगे बढ़ने में सहायक रहेंगे, व्यापार को बढ़ाने का प्रयास करें, नियमितता का ध्यान रखकर कार्य करें.

उदयकालीन ग्रह चाल

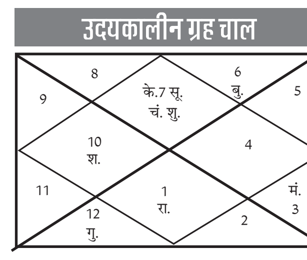

पंचांग

रा.मि. 07 संवत् 2083 अधिक ज्येष्ठ शुक्ल द्वादशी गुरूवासरे दिन 8/31, चित्रा नक्षत्रे दिन 9/7, वरीयान योगे रात 4/43, बालव करणे सू.उ. 5/17, सू.अ. 6/43, चन्द्रचार तुला, पर्व- प्रदोष व्रत, शु.रा. 7,9,10,1,2,5 अ.रा. 8,11,12,3,4,6 शुभांक- 9,2,6.

व्यापार भविष्य

अधिक ज्येष्ठ शुक्ल द्वादशी को चित्रा नक्षत्र के प्रभाव से सरसों, गुड़, खांड, बाजरा, सुपारी, सौंठ, सोना, आदि में तेजी होगी, रूई, कपास, चांदी, में मंदी होगी, वायदा विचार आज के बने भाव पर व्यापार कर लाभ उठायें. भाग्यांक 3754 है.

SUDOKU 7403

		8			4			
1								9
3				2			5	
			1				8	
		5				4		
	7				9			
	6			3				2
9								1
			8			7		

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7402

6	3	8	5	2	1	4	7	9
7	9	1	4	6	3	5	8	2
2	4	5	7	9	8	6	3	1
9	1	3	2	5	4	8	6	7
4	6	2	8	1	7	9	5	3
5	8	7	6	3	9	1	2	4
3	2	4	1	8	5	7	9	6
8	7	6	9	4	2	3	1	5
1	5	9	3	7	6	2	4	8